4. अलंकार

अभ्यास-कार्य

पृष्ठ संख्या–174

उत्तर–

4. 1. **यमक तथा श्लेष अलंकार में अंतर**

यमक	श्लेष
• एक शब्द का प्रयोग एक से अधिक बार होता है, पर प्रत्येक के अलग-अलग अर्थ होते हैं; जैसे- **कनक कनक** तै सौगुनी मादकता अधिकाय' यहाँ पहले 'कनक' का अर्थ 'धतूरा' है दूसरे 'कनक' का अर्थ सोना' है।	• किसी शब्द का प्रयोग तो एक बार ही होता है, पर उसके एक से अधिक अर्थ निकलते है; जैसे- 'मंगन को देखि, **पट** देति बार बार है' यहाँ 'पट' शब्द के दो अर्थ हैं- 'दरवाज़ा' तथा 'वस्त्र'

2. **उपमा तथा रूपक अलंकार में अंतर**

उपमा	रूपक
1. प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत या उपमेय और उपमान के बीच समानता दिखाई जाती है; जैसे- 'पीपर पात सरिस मन डोला' अर्थात पीपल के पत्ते के समान मन डोलने लगा।	1. प्रस्तुत पर अप्रस्तुत का या उपमेय पर उपमान का आरोपण किया जाता है; जैसे- 'चरण-कमल बंदौ हरिराई'। कमल रूपी चरणों की वंदना की जा रही है।
2. उपमा के चार अंग होते हैं- (*i*) उपमेय (*ii*) उपमान (*iii*) वाचक शब्द (*iv*) साधारण धर्म।	2. चूँकि प्रस्तुत पर अप्रस्तुत का आरोपण होता है, अत: केवल दो ही अंग होते हैं- (*i*) उपमेय (*ii*) उपमान

3. **रूपक तथा उत्प्रेक्षा अलंकार में अंतर**

रूपक	उत्प्रेक्षा
1. प्रस्तुत पर अप्रस्तुत का जहाँ आरोपण होता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है; जैसे-'मुख-चंद्र' 'सीता का मुख चंद्रमा ही है।	1. प्रस्तुत पर अप्रस्तुत की जहाँ संभावना की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है; जैसे-'सीता का मुख मानो चंद्रमा है।'
2. उपमेय तथा उपमान पदों के बीच प्रायः योजक-चिह्न लगा होता है।	2. मानो, ज्यों, जनुँ आदि वाचक शब्दों का प्रयोग होता है।

4. **शब्दालंकार और अर्थालंकार में अंतर**

शब्दालंकार	अर्थालंकार
1. जहाँ शब्दों के विशिष्ट प्रयोग से चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ शब्दालंकारों की सत्ता होती है।	1. जहाँ अर्थ द्वारा चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ अर्थालंकारों की सत्ता होती है।

5. 1. तरनि तनुजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।
2. माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर।
कर का मनका डारि के, मन का मनका फेर।।
3. रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानुष चून।।
4. पीपर पात सरिस मन डोला।
5. कमल-नयन बंदौ हरिराई।
6. उस काल मारे क्रोध के तन काँपने उनका लगा,
मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा।
7. आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।।
8. बीती विभावरी जाग री/अंबर पनघट में डुबो रही/तारा-घट उषा-नागरी।

6. 1. रूपक 2. उपमा 3. यमक
4. अनुप्रास 5. श्लेष 6. उत्प्रेक्षा
7. मानवीकरण 8. अतिशयोक्ति

7. 1. प्रात–नभ 2. हरिपद 3. बच्ची 4. मन
5. उदयगिरि 6. मुख 7. नभ–मंडल 8. वचन
9. रूप 10. शील

8. 1. सोम 2. नीला शंख 3. काम 4. कमल
5. कुलिस 6. फूल 7. मरुस्थल 8. पीपरपात
9. मंच 10. शशि

9. 1. रूपक 2. अनुप्रास 3. उपमा 4. यमक
5. अनुप्रास 6. मानवीकरण 7. यमक 8. अनुप्रास
9. उपमा 10. उत्प्रेक्षा 11. उपमा 12. उपमा
13. अनुप्रास 14. श्लेष 15. अतिशयोक्ति 16. उत्प्रेक्षा
17. रूपक 18. मानवीकरण 19. मानवीकरण 20. उत्प्रेक्षा
21. रूपक 22. श्लेष 23. उत्प्रेक्षा 24. यमक
25. उपमा 26. यमक 27. मानवीकरण 28. रूपक
29. अनुप्रास 30. रूपक 31. उत्प्रेक्षा 32. अनुप्रास
33. अनुप्रास 34. अनुप्रास 35. उपमा 36. अतिशयोक्ति
37. उत्प्रेक्षा 38. श्लेष 39. यमक 40. उपमा
41. उपमा 42. रूपक 43. उत्प्रेक्षा 44. मानवीकरण
45. मानवीकरण 46. अतिशयोक्ति

❑❑❑